तकनीकी प्रसार संख्या-9

बकरियों में परजीवी नियन्त्रण

डॉ. जी. सी. गहलोत
प्रभारी बकरी-परियोजना

डॉ. कर्मवीर सैनी
सह अनुसंधानकर्ता

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

भाकृअनुप
ICAR

अखिल भारतीय समन्वित बकरी अनुसंधान परियोजना
पशु आनुवांशिकी एवं प्रजनन विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर
राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

अन्तः परजीवी :

वे परजीवी, जो बकरियों में उनकी आहार नाल, रक्त या यकृत आदि में निवास करते हैं, जैसे – फीताकृमि, गोलकृमि, यकृतकृमि व काक्सिडिया आदि। ये मुख्य रूप से अपना पोषण बकरी के शरीर से प्राप्त करते हैं और उसमें अनेक रोग उत्पन्न करके पशु को कमजोर बना देते हैं तथा कई बार उसकी मृत्यु का कारण बनते हैं।

आन्तरिक परजीवी के अण्डे संक्रमित बकरी के मल/मिंगनी के साथ बाहर निकलते है व इसके सम्पर्क मे आने वाले चारे –पानी के माध्यम से स्वस्थ बकरियों को संक्रमित करते हैं। रोगी बकरियों में शारीरिक कमजोरी व आंखो में गीजड़ आना, दस्त लगना या कब्ज होना तथा मिंगनियों का बदबूदार होना, कभी–कभी दस्त के साथ खून आना, शरीर में खून की कमी होना, अखाद्य वस्तुओं को खाना आदि लक्षण दिखाई देते हैं।

रोग से बचाव व उपायः

- वर्ष में 3–4 बार पाबाडीन, निलवर्म आदि से डीवर्मिंग करायें।
- चारे–पानी को बीमार बकरी के मल आदि से दूषित होने से बचायें।

बाह्य परजीवी :

ये परजीवी बकरी की त्वचा पर निवास करते हैं जिससे बकरी की त्वचा रूखी–सूखी पड़ जाती है तथा उस स्थान से बाल गिरने लगते हैं। इनसे

प्रभावित पशु सुस्त पड़ जाते हैं। परजीवी के रक्त चूसने के कारण बकरी कमजोर हो जाती है तथा एनीमिया हो जाता है और उनका उत्पादन घट जाता है।

बकरियों में ये परजीवी पूंछ व गुदा के आसपास, जाँघ के अन्दरूनी भाग की खाल से चिपके हुए पाये जाते हैं। ये बकरी का रक्त पीकर अपना जीवन पूरा करते हैं। त्वचा पर दाद, खाज व खुजली आदि के अतिरिक्त कुछ घातक रोग जैसे पीलिया (लाल पेशाब की बीमारी), थाइलेरियोसिस, बेबेसियोसिस, एनप्लाज्मोसिस आदि कीटाणुओं से पैदा होने वाले रोगों को फैलाने में भी सहायक है। बकरियों में जुएं व किलनियाँ (चींचड़), माइट्स परजीवी मुख्य है। बकरियों में खाज की आरम्भिक अस्था में शरीर पर छोटे–छोटे लाल दाने पड़ते है तथा खुजली होने के कारण पशु शरीर को खम्भे, दीवार व फेन्सिंग आदि से रगड़ता है जिससे वह अपने शरीर को घायल कर लेता है।

किलनियाँ नमीयुक्त अंधेरे स्थानों पर बाड़े में छिपी रहती है तथा हजारों की संख्या में जमीन पर अंडे देती है। अधिकतर ये पेट, दोनों जाँघो के मध्य भाग, कान तथा पूंछ के नीचे चिपकी रहती है। किलनी जूँ की अपेक्षा अधिक हानिकारक होती है क्योंकि यह कुछ रोगों को रोगी पशु से दूसरे स्वस्थ पशुओं तक पहुंचाती है।

दवा के पानी से नहलानाः

बकरियों को स्वस्थ रखने व विभिन्न रोगों से बचाने के लिए उनको दवा के पानी से नहलाना (डिपिंग) ही एक सरल उपयोगी तरीका है। बकरियों को नहलाने के लिए डिपिंग टेंक में 0.2 प्रतिशत का सायथियान

या 0.5 प्रतिशत मैलाथियान का घोल बनाकर नहलाना चाहिए। बकरियों को दवा के पानी से नहलाने के समय निम्न बातों को ध्यान में रखना अति आवश्यक है।

1. सभी बकरियों को नहलाने से पहले पानी पिला देना चाहिये अन्यथा बकरी दवा का पानी पी सकती है जिससे पशु की मृत्यु हो सकती है।
2. वर्षा या अधिक ठंड के दिनों में नहीं नहलाना चाहिये।
3. नहलाने वाला दिन सूखा हो तथा नहलाने का कार्य सुबह ही कर लेना चाहिये।
4. कमजोर व अस्वस्थ पशु को न नहलाएं।
5. नहलाने से पहले देख लेना चाहिये कि शरीर पर घाव आदि न हो।

भुरकावः

बाह्य परजीवी का प्रकोप होने पर मिथईल पैराथियान पाउडर 1 भाग व 3 भाग छनी हुई राख का मिश्रण परजीवीग्रसित पशु के शरीर पर शाम के समय भुरकाव करना लाभदायक होता है।